साहित्य और सिनेमा

Literature & Cinema

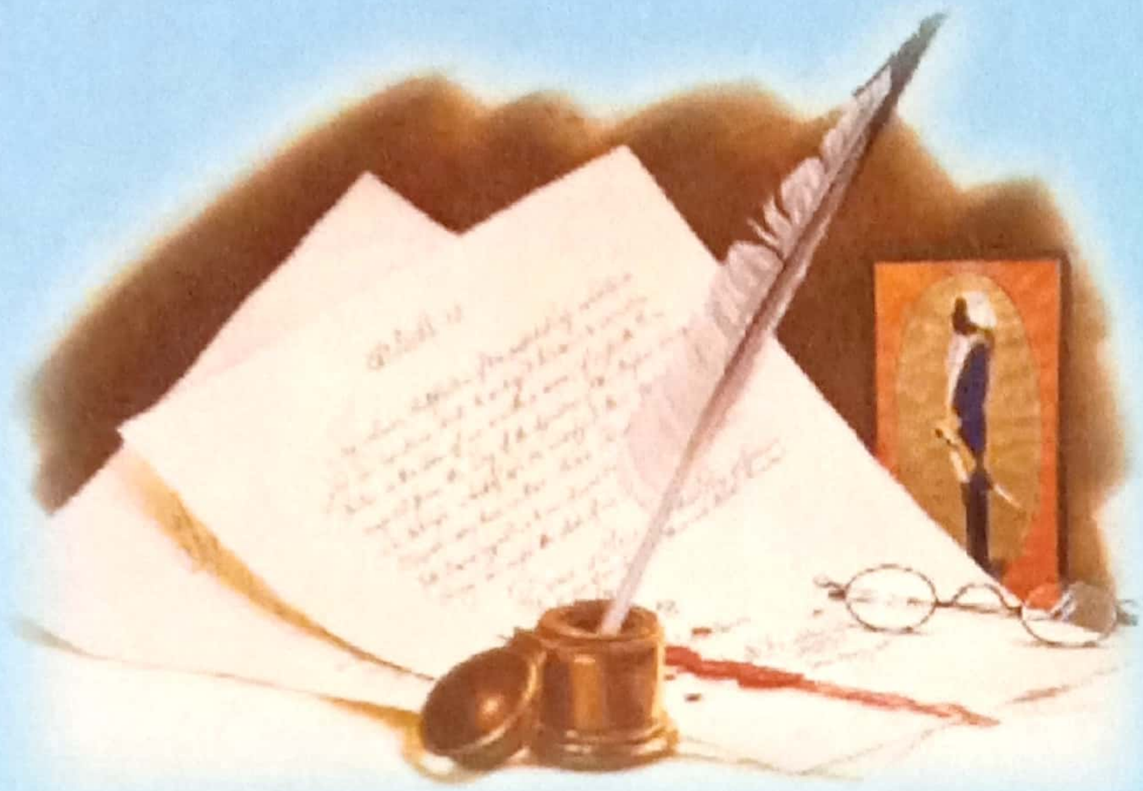

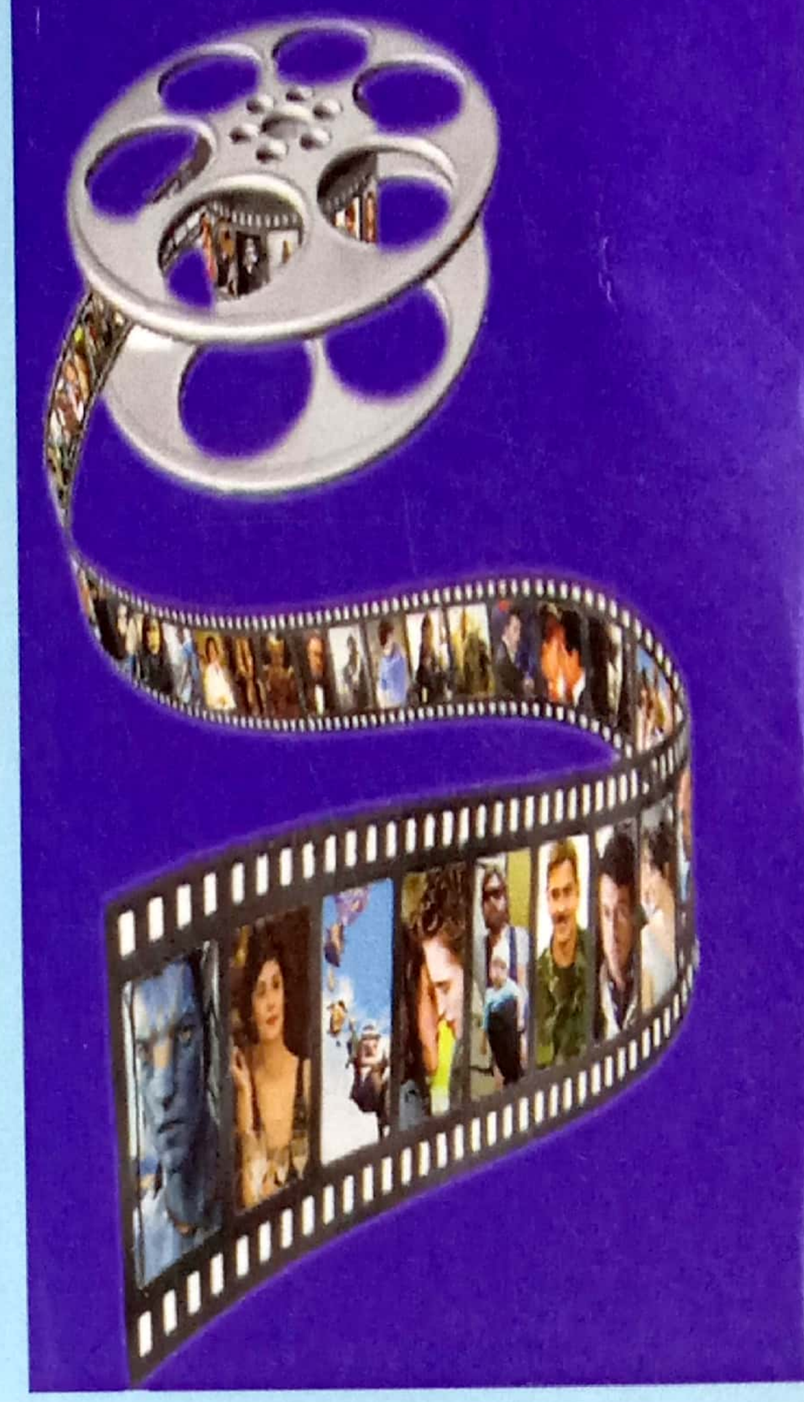

सम्पादक (हिंदी)
डॉ. शीला भास्कर
Editor (Hindi)
Dr. Sheela Bhaskar

सम्पादक (अंग्रेजी):
श्रीमती स्वपना के. जाधव
Editor (English)
Smt. Swapna K. Jadhav

SSNC DR. B. R. AMBEDKAR SMARAKA A.K.K. EDUCATION SOCIETY
ಕಾಯಕದಿಂದ ಬಂದದ್ದು ಲಿಂಗಕ್ಕೆ ಅರ್ಪಿತ
ಶ್ರೀ ಶರಣ ನುಲಿಯ ಚಂದಯ್ಯ
HUBLI
ಶಿಕ್ಷಣವೇ ಶಕ್ತಿ

साहित्य और सिनेमा

(20 जनवरी 2018 को आयोजित एक दिवासीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सग्रहीत आलेख)

ISBN : 978-93-5291-910-9

प्रधान संपादक : डॉ. शीला भास्कर (हिंदी)

कॉपी राइट : संपादकाधीन

संस्करण : प्रथम, 2018

शब्द सज्जा एवं मुद्रक : भास्कर आर्ट मीडिया, हुब्बल्ली

मूल्य : ₹ 500.00

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगें ही ऐसा नहीं है।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं। अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

15. सिनेमा और साहित्य
हिन्दी फिल्मी गीतों में पर्यावरण — 50
• डॉ. ममता एच. शिरगंबी

16. साहित्य, समाज और सिनेमा — 53
• प्रा. नयन भादुले–राजमाने

17. बांग्ला साहित्य एवं हिन्दी सिनेमा — 55
• मदन मोहन कुमार

18. हिंदी साहित्य और सिनेमा का अंतः संबंध — 57
• गणेश ताराचंद खैरे

19. हिन्दी सिनेमा में स्त्री विमर्श — 62
• डा. प्रशांतिनी. पी. मरली

20. प्रेमचन्द का साहित्य और हिन्दी सिनेमा — 66
• डॉ0 विधु खरे दास

21. हिन्दी फिल्मी गीतों में शोषित स्त्रीयों के चित्रण : एक अध्ययन — 69
• डॉ. के.वी.कृष्णमोहन, सह आचार्य,

22. **साहित्य, सिनेमा और समाज** — 73
• प्रो. श्रीमती वहीदा दाऊदजी

23. **हिन्दी साहित्य और सिनेमा : एक चिंतन** — 75
• श्रीमती प्रीति माहेश्वरी

24. आधुनिक सिनेमा में नारी पात्र — 79
• डॉ. विजया चांदावत

25. हिंदी साहित्य और सिनेमा : एक चिंतन — 82
• प्रा. डॉ. सुषमा कोंडे

26. **नये हिंदी सिनेमा में नयी स्त्री** — 87
• डॉ.(श्रीमती) एस. एस. सिद्धगेरीमठ,

27. **साहित्य, समाज और सिनेमा** — 90
• डॉ. पी. नागमणी

28. साहित्य, सिनेमा और समाज — 92
• डॉ. के. वी. उमाशंकर, (शव)

29. सिनेमा के क्षेत्र में साहित्य का योगदान — 95
• डॉ. एस. सिद्दय्या

30. हिन्दी कथा – साहित्य की सिनेमा को देन तथा वर्तमान में बदलते परिदृश्य — 97
• विजयलक्ष्मी एच. एस

25

हिंदी साहित्य और सिनेमा : एक चिंतन

प्रा. डॉ. सुषमा कोंडे
सेन्ट विन्सेंट कॉलेज, पुणे.

साहित्य समाज का दर्पण है तो सिनेमा भी समाज का ही प्रतिबिंब है। उच्च साहित्य आम व्यक्ति के हाथ पहुँचे या न पहुँचे सिनेमा हर स्तर तक पहुँचता है। अतः सिनेमा की जिम्मेदारी अधिक है।

सिनेमा दुनिया को फ्रांस की देन है । भारत में सिनेमा के पहले कदम 7 जुलाई 1896 को पडे । फ्रांस से ही आये लुमिअर बंधुओं ने मुंबई के वारसंस होटल में 06 लघु फिल्मों का पैकेज "मैजिक लैम्प" का प्रदर्शन कर भारत की जनता का फिल्मों से परिचय कराया। 3 मई 1913 को राजा हरिश्चंद्र नामक भारत की पहली फीचर फिल्म भारतीय दर्शकों के सामने थी । इस फिल्म के निर्माता थे मराठी भाषी धुंडीराज गोविंद फाल्के। जिन्हें हम दादासाहेब फाल्के के नाम से जानते हैं और भारतीय सिनेमा का पितामह मानते हैं ।

सन 1913 से सन 1930 तक का हिंदी सिनेमा मूक सिनेमा के नाम से जाना गया। यह भारत के लिए गौरव की बात हैं कि सन1926 में बनी फिल्म 'बुलबुले परिस्तान' पहली फिल्म थी जिसका निर्देशन किसी महिला ने किया था। बेगम फातिमा सुल्ताना इस फिल्म की निर्देशिका थी । वर्षे 1921 में बनी अपनी फिल्म 'वत्सला हरण' के लिए पोस्टर जारी किया।

पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' को माना जाता है जिसे आर्देशिर ईरानी ने 1931 में निर्मित किया। फिल्मकार मोहन भवनानी के लिए मुंशी प्रेमचंद ने फिल्म लिखी। यह फिल्म 'मिल मजदूर' और 'गरीब मजूदर' नाम से भी पंजाब में प्रदर्शित हुई। 1934 में प्रेमचंद की ही कृतियों पे 'नवजीवन' और 'सेवासदन' नामक फिल्में बनी। इस फिल्म का प्रभाव अधिक इतना अधिक था कि इसे कई शहरों में सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था।

प्रेमचंद की कहानी 'त्रिया चरित्र' के आधार पर 'स्वामी' नामक फिल्म बनी। 1946 में रंगभूमि पर भी इसी नाम से फिल्म बनी राजकपूर की बरसात 1949 में ही आयी । लता मंगेशकर जैसी गायिकाएं सामने आयी। दिलीप कुमार की पहली हिट फिल्म 'मिलन' इन्ही दिनों आयी। अन्य फिल्मों में ज्वार भाटा, प्रतिभा प्रमुख रही। आर. के. फिल्म्स, नवकेतन, राजश्री समेत कई प्रोडक्शन हाउस के आगमन इसी में दशक में हुआ । 1946 में बनी फिल्म 'नीचा नगर' कला फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट फिल्म अवार्ड का खिताब जीतने में कामयाब रही। जुबली स्टार के नाम से प्रसिध्द राजेन्द्र कुमार, ट्रेजडी क्वीन मीना कुमारी, अप्रतिम सौंदर्य की रानी मधुबाला और नरगिस ने भी इसी दशक में हिंदी सिनेमा जगत के अभिनय क्षेत्र में पदार्पण किया। गुरूदत्त, के. आसिफ, कमाल अमरोही, चेतन आनंद जैसे महत्वपूर्ण फिल्मकार ओर शंकर जयकिशन, सचिन देव बर्मन, खय्याम, शैलेन्द्र, हसरत जयपुरी, मजरूह सुल्तानपुरी जैसे गीतकारों ने हिंदी सिनेमा को अपनी कला से इसी दशक से समध्द कराना शुरू किया। हुस्नलाल

भगतराम जी की पहली संगीतकार जोडी भी 1944 की चाँद नामक फिल्म से सामने आयी।

साल 1947 में आयी महबूब खान की फिल्म मदर इंडिया रिलीज हुई । यह प्रतिष्ठित ऑस्कर के लिए फॉरेन लैंग्वेज फिल्म कैटगरी में नॉमीनेट होने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी । इसी फिल्म के लिए अभिनेत्री नरगिस को कालोंवी फिल्म समारोह में सर्व श्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। यह हिंदी सिनेमा के लिए महत्वपूर्ण पडाव था।

सिनेमा एक कला है, एक तकनीक है, एक वैज्ञानिक आविष्कार है, एक दिलचस्प चीज है। दादासाहेब फालके जैसे कलासक्त व्यक्ति ने दर्शकों की अभिरूचि को समझकर तीन मई 1931 को बंबई के कॉरोनष्शन सिनेमाग्रह में राजा हरिश्चंद्र नाम की अवांक फिल्म प्रदर्शित की । तब से भारतीय सिनेमा की नींव डाल दी। यह पहली फिल्म थी जिसे संपूर्ण रूप से प्रथम भारतीय फिचर फिल्म मान्यता प्राप्त है। 14 मार्च 1931 में अर्देशर इराणी ने इंपिरिअल मुव्हिटोन के माध्यम से 'आलम आरा' नामक पहली सवाक फिल्म हिंदी में बनाई । प्रभात फिल्म दवारा प्रस्तुत पहली बोलती फिल्म 'आरोध्या का राजा' थी 1932 जो हिंदी और मराठी में एक साथ जारी की गई थी।

तीस के दशक में न्यू थिएटर्स, प्रभात, रणजित, बॉम्बे टॉकीज, मिनर्वा आदि फिल्म कंपनीयों की निर्मिति हुई। यह युग राजनीतिक पराधीनता का युग था। हिमांशु राय के बॉम्बे टॉकीज द्वारा प्रदर्शित फिल्म 'कर्मा' (1933) के चुंबन दृश्य चर्चा में थे। सन 1937 में इराणी ने भारत में प्रक्रिया करके 'किसान कन्या' नाम का पहला रंगीन सिनेमा बनाया। भारत में रंगीन सिनेमा बनाने का श्रेय इराणी को मिला। सन 1936 में महाराष्ट्र के संत कवि तुकाराम के जीवन पर आधारित फिल्म जो वी शांताराम द्वारा प्रभात फिल्म कंपनी के लिए बनाई गई थी, जिसे 1937 में वेनिस फिल्म समारोह में सम्मान प्राप्त हुआ था। 'संत तुकाराम' वेनिस अंतरराष्ट्रीय चित्रपट महोत्सव में सम्मानित होनेवाली पहली भारतीय फिल्म थी। इसके पश्चात वी शांताराम ने 'डॉ. कोटनिस की अमर कहानी' तथा दो ऑखे बारह हाथ जैसी अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सामाजिक फिल्मों का निर्माण किया। प्रथमेंशचंद्र बरूआ द्वारा दिग्दर्शित 'देवदास' फिल्म गीतों के कारण काफी चर्चित रही।

1942 के स्वंतत्रता आंदोलन का असर हिंदी सिनेमा पर पड़ा। इसके पूर्व के दशक में कुंदनलाल सहगल, मास्टर विनायक, फियर लेस नादिया, दुर्गा खोटे, पृथ्वीराज कपूर, लीला चिटणीस, शोभना समर्थ, ललिता पवार, मोतीलाल, शंकुतला परांजपे आदि के अनेक चित्रपट प्रदर्शित हुए। स्वतंत्रता के बाद ट्रेजेडी किंग दिलीप कुमार, शोमॅन राजकपूर और रोमॅटिक चॉकलेट हीरो देवआनंद की प्रतिभा सामने आई। इस समय में गुरूदत्त, बिमल रॉय, बी. आर. चोपड़ा आदि निर्माताओं ने अनेक फिल्में बनाई। यह समय 'सॉग ॲण्ड डान्स' का था। इसी समय में राजकपूर ने 'आर.के.फिल्म' और देव आनंद ने 'नवकेतन फिल्मस' की स्थापना की। यह समय रोमॅटिक फिल्म का था साथ ही सामाजिक और पारिवारिक विषयों पर फिल्में बनती रही।

सिनेमा के विश्लेषक जयसिंग कहते हैं, "हमारे देश में, भाषाई सिनेमा में हिंदी सिनेमा ही ऐसा है जिसने सभी भाषाई सीमाओं, बंदिशो को तोडा है और हर दिल अजीज बनकर लोगों के मन–मस्तिष्क में छा जाने में सफल रहा है। अब तो हिंदी सिनेमा देश की सीमाओं से निकलकर सारी दुनिया में लोगों को भा रहा है।"

सत्तर का दशक भारतीय हिंदी सिनेमा के इतिहास में स्टार युग से माना जाता है। इस युग में सुनील दत्त, धर्मेन्द्र, शशि कपूर, संजीव कुमार, जीतेंद्र, राजेश खन्ना, राजकुमार, शत्रुघ्न सिन्हा और अमिताभ बच्चन जैसे अनेक सुपरस्टार अभिनेताओं ने हिंदी सिनेमा के पर्दे पर धूम मचा दी। इसी दशक की तीन महत्वपूर्ण सफल फिल्में 'बॉबी', 'शोले और 'जय संतोषी मां' बनी । इसी दशक में राजेश खन्ना की 15 फिल्में सुपरहिट बनी और उन्हें हिंदी सिनेमा का पहला सुपरस्टार बनने का सौभाग्य मिला। बच्चन की 'जंजीर' और 'शोले' सिनेमा ने धूम मचा दी। ॲक्शन पट सिनेमा की शुरूआत हुई और हिंदी सिनेमा को एक और सुपरस्टार मिल गया। उनकी आवाज और अभिनय ने दर्शकों को आकर्षित किया और वे हिदी सिनेमा के 'आयकॉन' बने । उनकी 'अँग्री यंग मॅन्' की प्रतिमा तैयार हो गयी।

अस्सी के दशक में वीडिओं का प्रवेश हुआ और पायरसी का प्रभाव बढ़ा गया। इसके कारण सिनेमा गृह का 'हाऊस फुल' का बोर्ड लगना कम हुआ। अस्सी के उत्तरार्ध में, शाहरूख, आमिर, सलमान, माधुरी, जुही चावला आदि कलाकारों का प्रवेश हुआ।

सिनेमा में हिंदी और हिन्दीतर भाषा में लिखे गये लेखकों की रचनाएँ सम्मिलित हुई है। हिन्दी के प्रसिध्द रचनाकार मुंशी प्रेमचंद इसका उदाहरण है 'सेवा सदन' तथा 'मिल मजदूर' इन दो फिल्मों के बाद उनका मोहभंग हुआ था वे मुंबई से वापस चले गए थे। उनके उपन्यास और कहानियों पर कुछ फिल्में बनी। 'गोदान'–त्रिलोक जेटली, 'गबन'–ऋषिकेश मुखर्जी, 'हीरा मो ती'–कृष्ण चोपड़ा, 'सद्गती', 'शतरंज के खिलाड़ी'–सत्यजित राय, जैसी फिल्में उल्लेखनीय है।

कुछ लेखक, गीतकार, कवि, शायर हिन्दी सिनेमा में चर्चित रहे जिनमें चतुरसेन शास्त्री, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, फणीश्वरनाथ रेणू, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, धर्मवीर भारती, भीष्म सहानी, कमलेश्वर, शैलेंद्र, आनंद बक्षी, राजेंद्र यादव, मन्नू भंडारी, अशोक वाजपेयी, इंदीवर, संतोष आनंद, नीरज, भरत व्यास, प्रदीप, गुलजार, जावेद अख्तर जैसे नाम उल्लेखनीय है । सिनेमा के लिए हिन्दी भाषी रचनाकारों के साथ ही बंगाली, उर्दू, मराठी, पंजाबी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के रचनाकरों का योगदान महत्वपूर्ण है। अनेक पटकथा–संवाद पहले बांग्ला या अंग्रेजी में लिखे जाते थे, बाद में उसका अनुवाद होता था। पुरानी फिल्मों में उर्दू शायरों का बोल–बाला था, इसमें कई शायरों के नाम जुड जाते हैं। हिन्दी के कुछ रचनाकार और उनकी रचनाएँ उल्लेखनीय है।

मुंशी प्रेमचंद–गोदान (गोदान–त्रिलोक जेटली), गबन (गबन–कृष्ण चोपड़ा, ऋशिकेश मुखर्जी), सद्गती (सद्गती–सत्यजीत राय), दो बैलो की कथा (हीरा मोती), शतरंज के खिलाड़ी (शतरंज के खिलाड़ी–सत्यजीत राय), भगवती चरण वर्मा– चित्रलेखा (चित्रलेखा–केदार शर्मा), चंद्रधर शर्मा गुलेरी– उसने कहा था (उसने कहा था–मोनी भट्टाचार्य), मोहन राकेश– उसकी रोटी (उसकी रोटी–मणी कौल), आषाढ़ का एक दिन (आषाढ़ का एक दिन–मणी कौल), कमलेश्वर–बदनाम बस्ती (बद्नाम बस्ती– प्रेम कपूर), फिर भी (फिर भी–शिवेंद्र सिन्हा), डाक बंगला (डाक बंगला–गोविंद रंजन), फणीश्वरनाथ रेणु– मारे गए गुलफाम (तीसरी कसम–बासू भट्टाचार्य), निर्मल वर्मा–माया दर्पण (माया दर्पण– कुमार साहनी), मन्नू भंडारी–यही सच है (रजनी गंधा– बासू चटर्जी), जीना यहाँ (बासु चटर्जी), आपका बंटी (शिशीर मिश्रा), आपका बंटी (एवढ़सं

आभाळ (मराठी)– बिपीन नाडकर्णी), मुक्तीबोध (सतहसे उठता आदमी– मनीशंकर कौल), विनोद शुक्ला– (नौकर की कमीज– मनी कौल), कुसुम बंसल एक और पंचवटी (पंचवटी–बासु चटर्जी), विजयदान देथा–दुविधा (बदनाम बस्ती–मनी कौल), परिणती (परिणती–प्रकाश झा), पहेली (पहेली–अमोल पालेकर)

भीष्म साहनी–तमस (तमस–गोविंद निलहानी), धर्मवीर भारती–सूरज का सातवा घोड़ा गुनाहों का देवता (सूरज का सातवा घोड़ा, गुनाहों का देवता–श्याम बेनेगल), राजेंद्र यादव– सारा आकाश (सारा आकाश–बासू चटर्जी), श्रीलाल शुक्ल– (राग दरबारी, नीम का पेड), इन रचनाकारो के साथ ही अनेक कवि, शायर और लेखकों ने फिल्मों को संवाद, पटकथा, और गीत दिये हैं।

"फिल्म छवि है, फिल्म शब्द है, फिल्म गति है, फिल्म नाटक है, फिल्म कहानी है, फिल्म संगीत है, फिल्म में मुश्किल से एक मिनट का टुकड़ा भी इन बातों का साक्ष्य दिखा सकता है।" *(सत्सजित राय हिन्दी सिनेमाः बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, पृ. 12)*

प्रसिद्ध समीक्षक कमला प्रसाद ने कहा है– "जनमानस को इस कलारूप (सिनेमा) ने जितने गहरे स्पर्श किया है, उतना और किसी माध्यम ने नहीं। कला पंरपरा में यह दृश्य–काव्य का विकसित रूप तो है ही, साथ में विज्ञान की मदद से इसने चतुर्दिक विस्तार किया है। इस कला रूप में चित्र, संगीत, नृत्य, रंगकर्म, काव्य इत्यादि का कला–संगम है। देश–काल को लाँघने की शक्ति है। स्मृति खेलने की आदत है।" *(हिंदी सिनेमा : बीसवीं से इक्कीसवी सदी तक, पृ.12)*

जीवन को संपूर्णता में प्रस्तुत करने के कारण ही सिनेमा समाज का सबसे सशक्त माध्यम है। चक दे इंडिया हो या भाग मिल्खा भाग, जीवन की संपूर्णता का आख्यान इन फिल्मों में सफलता से उभरा हैं इसी तरह मदर इंडिया में भी नरगिस का अपने बेटे को गोली मारना जीवन का सबसे कड़वा सच हो सकता है लेकिन उसे छोड़ देने से वह कहानी अधूरी ही रह जाती। सिनेमा जीवन के विविध रंग प्रस्तुत करता है और समाज के लिए निर्णायक साबित होता है। समाज की संस्कृति, परंपराएँ, मान्यताएँ, जीवन–शैलियाँ, परिस्थितियाँ, ऊहापोह, जीवन दर्शन आदि के द्वारा सिनेमा लोक की सच्ची पहचान कराता है।

देश विदेश के सुरम्य स्थलों की सैर सिनेमा देखकर हो जाती है। गीत–संगीत के द्वारा भी मनुष्य के मनोरंजन का सबसे सशक्त माध्यम रहा है। सिनेमा मनुष्य को न सिर्फ प्रेम करना सिखाता है बल्कि उसके मार्ग में आने वाली बाधाओं से निपटना भी सिखाता है। यह प्रेम शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक हो सकता है। यह प्रेम संबंधों से परे भी हो सकता है–माँ–बटे का प्रेम, स्त्री–पुरूष का प्रेम, पिता–पुत्र का प्रेम, दोस्त–दोस्त का प्रेम, भाई–भाई का प्रेम, भाई–बहन का प्रेम, अमीर–गरीब का प्रेम, राजा–रंक का प्रेम आदि।

प्रेम की तरह ही सिनेमा अन्य मानवीय मूल्यों की स्थापना भी करता है। सिनेमा समाज के भयावह अथवा कटु अथवा कुत्सित यथार्थ को दिखाते हुए एक बेहतर समाज के निर्माण का स्वप्न भी दिखाता है। ऐसा सिनेमा नहीं बनाया जाता जो समाज के यथार्थ को प्रस्तुत तो करे परंतु उसका कोई समाधान प्रस्तुत न करे। दर्शक सिनेमा देखने जाता है मनोरंजन के लिए लेकिन वह उसमें प्रदर्शित समस्या का निश्चित समाधान अवश्य चाहता है। दर्शक अधर में लटका नहीं रहना चाहता। उसे अंततः सिनेमा द्वारा एक निश्चित समाधान, निश्चित मार्गदर्शन चाहिए।

सिनेमा हृदय से संवाद करने का सबसे बड़ा माध्यम है जो दर्शक की संपूर्ण चेतना को अपने अनुसार अनुकूलित करता है और उसके आनंद का कारण बनता है यहाँ पर दर्शक के सारे विभाव, अनुभाव, संचारी व स्थायी भावों का साधारणीकरण हो जाता है और दर्शक परमानंद की अवस्था को प्राप्त होता है।

भाव, रस, साधारणीकरण, मानवीय संवेदन व अनुभूति आदि के दवारा सिनेमा मनुष्य के मन को अपने आकर्षण में इस तरह बाँधता है कि वह सिनेमा के प्रति सब कुछ भूलकर समर्पित हो जाता है। सिनेमा का जादू इसीलिए हर व्यक्ति पर पड़ा है कि वह अपने आकर्षण में मनुष्य–मनुष्य में भेद नहीं करता। उसका सौंदर्य हर व्यक्ति के लिए है। सिनेमा इसीलिए मनोरंजन की सबसे सशक्त विधा रही है ही, मनुष्य के सुख–दुख, हार–जीत, आशा–निराशा को अभिव्यक्त करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है और रहेगा।

सत्यजित राय के अनुसार '"साहित्य की कहानी को जैसे शब्दों के बाद वाक्यों में सजाना पड़ता है, वैसे ही सिनेमा की कहानी को भी खण्ड–खण्ड दृश्यों और खण्ड–खण्ड शॉट्स में विभाजित करके कहना पड़ता है। सिनेमा का एक–एक शॉट, एक–'एक वाक्य की तरह होता है। कहानी की तरह ही शॉटस की भाषा होती है। वह ऐकान्तिक रूप से चित्रों की भाषा होती है। दृश्य–वस्तु की भाषा होती है। फिर साहित्य की कहानी को भी जैसे अनुच्छेद और परिच्छेदों में विभाजित करने की जरूरत पड़ती है वैसे ही सिनेमा की कहानी को भी भिन्न अथवा फेड–अप के जरिए कई तरह के विशेष यान्त्रिक और रासायनिक उपायों से खण्डों और पर्वों में बाँटना सम्भव है।"

रविंद्र कात्यायन के अनुसार साहित्य की भाषा शब्दों की भाषा है, सिनेमा की भाषा मुख्यतः कैमरे की भाषा है। अगर कैमरा नामक यन्त्र का अविष्कार न होता तो इस भाषा की सृष्टी न होती। पटकथा, संवाद, ध्वनियाँ, खान–पान, वेषभूषा, परिवेश, गीत–संगीत, लोकेशन आदि सभी घटकों का सार्थक और रोचक संगुंफन है। और यह संगुंफन करता है कैमरा। कैमरा ही वह खिड़की है, जो इन घटकों में तालमेल करके हमारे सम्मुख एक सामूहिक कृति प्रस्तुत करती है।"

भारत की पहली फीचर फिल्म "राजा हरिश्चंद्र से लेकर दिसंबर 2017 की फिल्म 'टाइगर जिंदा है' का विचार करे तो सिनेमा का साहित्य के साथ किया सफर नजर आता है। भारतीय समाज के मूल्य, संवेदना के साथ आंतकवाद के खून भरे रंग भी सिनेमा में प्रतिबिंबित हो रहे है। हिंदी साहित्य सही दिशा– दर्शक है। सिनेमा में उसका उचित प्रयोग किया तो समाज में आदर्श परिवर्तन होगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) हिंदी सिनेमा : वीसवीं के इक्कीसवी सदी तक–सत्यजित राय
2) वर्तमान साहित्य : सिनेमा विशेषांक – 2002
3) सिनेमा और समाज – विजय अग्रवाल (1995)
4) हिंदी सिनेमा का इतिहास – प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

डॉ. शीला भास्कर
सम्पादक (हिंदी)

Smt. Swapna K. Jadhav
Editor (English)

ISBN : 978-93-5291-910-9